Vol. 10, Issue-2 (July 2021) pp.9-15 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

गुरमत संगीत की गायन शैलियाँ

करनजीत सिंह (जे.आर.एफ./नेट)
पीएच.डी. शोधार्थी
संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Email: karanrubal@yahoo.com

सारांश

भारतीय संगीत की अनेक शाखाओं में से गुरमत संगीत पूर्ण रूप से विकसित शाखा है। गुरमत संगीत के अंतर्गत काव्य और संगीत दोनों अपने स्तर पर विकसित हुए हैं। दोनों ही संयुक्त रूप से श्री गुरू ग्रंथ साहिब में विद्यमान है। गुरमत संगीत के अंतर्गत गायन रूपों के बिना वाणी अध्ययन संभव नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शास्त्रीय और लोक गीतों को गायन रूपों के लिए प्रयोग किया गया है। इन दोनों के अंतर्गत गुरमत संगीत की लगभग सारी गायन शैलियां जैसे कि पदे, अष्टपदी, घोड़ियां वारें आदि आ जाती हैं। इन शैलियों के अध्ययन से हम गुरमत संगीत की शास्त्रीय और लोक अंग गायन शैलियों को आसानी से विभाजित कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में गुरुमत संगीत की विभिन्न शैलियों एवं वर्तमान में उनके व्यवहारिक स्वरुप को रेखांकितर करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिन्दु:- गुरमत संगीत, गुरु नानक देव जी, रहाओ, अष्टपदी, गुल्दस्ता, पदे, पड़ताल, होली।

भारतीय संगीत का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसकी उत्पत्ति के बारे में हमें विभिन्न मत सुनने को मिलते है। जिसमें पक्षियों से स्वरों की उत्पत्ति, पत्थर के सात टुकड़ों से स्वरों का पैदा होना या मनोविज्ञान के साथ संगीत को जोड़कर संगीत का उद्गम होना आदि शामिल हैं। संगीत का यह सफर तीन स्वरों से चलकर आज विकसित होते हुए सात स्वरों तक आ पहुँचा है। संसार की सभी कलाओं में से संगीत को सर्वश्रेष्ठ कला माना है। इसीलिए इसका प्रयोग मंदिरों में मोक्ष प्राप्ति के लिए किया गया। भारतीय संगीत का सबसे पहला संगीतक ग्रंथ 'सामवेद' को माना जाता है। इस ग्रंथ में हमें सामगान का वर्णन मिलता है। इस विधा का प्रयोजन भगवान् की आराधना के अतिरिक्त रोजाना जीवन के साथ जुड़ा हुआ था।[1] इससे लगता है कि संगीत का और धर्म का संबंध बहुत गहरा और प्राचीन भी है। इसीलिए मध्यकाल में सक्रिय धार्मिक सम्प्रदाओं ने कीर्तन परम्परा को प्रचार के लिए माध्यम बनाया। वो चाहे वैष्णव सम्प्रदाय (निम्बार्क और वारकरी) हो, वल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक वल्लभाचार्य हो या फिर गुरमत संगीत के संस्थापक गुरू नानक देव जी हों। सभी ने धर्म के प्रचार के लिए संगीत को माध्यम बनाया।

गुरमत संगीत भी भारतीय संगीत की ही एक शाखा है, जिसने विकसित होते-होते अपना स्वतंत्र रूप ग्रहण कर लिया है। गुरबाणी संगीत में श्री गुरू ग्रंथ साहिब में रचित वाणी का गायन किया जाता रहा है। गुरमत संगीत

[1] गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, डॉ. वरिन्द कौर पदम, पृ.सं.-114

हिन्दुस्तानी संगीत से ही प्रभावित है। भारतीय संगीत में मुख्य रूप से दो धाराओं का प्रचलन रहा है-मार्गी और देशी संगीत। मार्गी संगीत का संबंध मोक्ष प्राप्ति से और देशी संगीत का संबंध लोक संगीत से माना जाता है। गुरू नानक देव जी ने मार्गी संगीत के पथ पर चलकर गुरबाणी संगीत की रचना की। इस ग्रंथ में रचित ज्यादातर वाणी रागबद्ध है जिस वजह से यह ग्रंथ पूर्व विश्व में एकमात्र रागबद्ध धार्मिक ग्रंथ है। गुरू नानक देव जी ने भाई मरदाना को साथ में लेकर कीर्तन तो किया ही साथ ही में लोगों को गुरबाणी के महत्व से भी अवगत करवाया।

डॉ॰ गुरनाम सिंह के अनुसार "सदियों प्राचीन सिख धर्म की, गुरमत संगीत अद्वितीय परम्परा है, जिसका गुरू नानक देव जी से लेकर समस्त गुरूओं ने मर्यादा के अंतर्गत प्रसारित किया।"[2] गुरू नानक देव जी और परवर्ती सभी सिख गुरूओं ने समस्त जीवन गुरबाणी के प्रचार में अर्पण कर दिया। इस परम्परा का संस्थापक होने के कारण गुरू नानक देव की योगदान सबसे महत्वपूर्ण रहा। उनके द्वारा की गयी चार उदासियों में उन्होंने विभिन्न इलाकों की संस्कृति को समझा और गुरबाणी संगीत की रचना की। डॉ॰ गीता पैंतल के अनुसार "गुरू नानक देव जी ने संकीर्तन एवं अपने विचारों के प्रचार के लिए आरम्भ से संगीत का आधार लिया बल्कि ऐसा कहा जाता है के पुनरूत्थान के लिए जन्म लिया।"[3]

गुरबाणी संगीत में पद रचनाओं ऊपर घर, रहाओ, अंक और राग शब्दों को अंकित किया गया है जिससे अभिप्राय है कि इन पदों का गायन इन्हीं नियमों के अंतर्गत किया जाए। जिसमें 'अंक' से अभिप्राय क्रम प्रदान करने से है। अंतरों की समाप्ति पर अंक का प्रयोग किया जाता है। रहाओ वाले पद के बाद अंतरों की संख्या का ज्ञात हमें अंक से ही होता है। इन से ही हमें काव्य शैली या गायन शैली का ज्ञात होता है जैसे दोपदे, तिपदे और अष्टपदी आदि। इसके बाद रहाओ वाले पद को गुरमत संगीत में केन्द्रीय भाव की तरह लिया गया है। सबसे पहले गायन का आरम्भ इसी पद के साथ किया जाता है। फिर हर अंतरे की समाप्ति पर इस पद का गायन दोहराया जाता है। जिसमें शब्द का केन्द्रीय भाव रहता है। रहाओ वाले पद केन्द्रीय संचालक के रूप में काम करते हैं। गुरमत संगीत में हमें शास्त्रीय अंग और लोक गायन अंग दोनों की रचनाएँ देखने को मिलती हैं। शास्त्रीय अंक की गायन शैलियों में सनातनी गायन रूप देखने को मिलते हैं। जिसके अंतर्गत शास्त्रीय नियमों का अनुसरण करते हुए गुरबाणी के भाव पक्ष को उजागर किया जाता है। गुरबाणी संगीत में ज्यादातर पहले अंतरे के बाद ही रहाओ वाला पद आता है। पर कई जगह हमें एक से ज्यादा रहाओ पदों वाले काव्य भी मिलते हैं।"[4]

गुरमत संगीत में 'राग' के बाद दूसरा महत्वपूर्ण शब्द 'घर' है। इसे घर 1, घर 2 आदि के रूप में अंकित किया गया है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में घरों की कुल संख्या 17 है। घर शब्द को लेकर गुरमत संगीत में विद्वानों का मतैक्य नहीं है। भाई कान सिंह नाभा अनुसार "घर के दो अर्थ हैं एक ताल और दूसरा स्वर। अगर इन्हें मूर्च्छना भेद से देखों तो

---

2 The Sikh Musicology, Dr. Gurnam Singh, page no.-2

3 पंजाब की संगीत परंपरा, डॉ. गीता पैंतल, पृ.सं.-110

4 गुरमत संगीत प्रबंध ते पासार, डॉ. गुरनाम सिंह, पृ.सं.-109

ये एक ही राग का सरगम प्रस्तार का गायन रूप है।"[5] ज्यादातर विद्वानों ने घर को ताल के रूप में स्वीकार किया है। क्योंकि ईरानी ताल पद्धति में भी ताल को अंकित करने के लिए एक गाह, दो गाह आदि संकेतों का प्रयोग किया जाता है।[6] गाह से अभिप्राय घर से है। इसीलिए हो सकता है कि सिख गुरूओं द्वारा इसका प्रयोग ताल बताने के लिए किया गया हो। इसी तरह गुरबाणी संगीत में रचित 22 वारों में से 9 के ऊपर ध्वनि को अंकित किया गया है। गुरबाणी संगीत में प्रातः काल आसा दी वार का गायन किया जाता है। वार शैली का प्रयोग बहादुर योद्धाओं को उत्साहित करने के लिए किया जाता था।

गुरबाणी संगीत की गायन शैलियों के अंतर्गत पदे (ध्रुपद), अष्टपदी (प्रबंध), पड़ताल, होली और गुलदस्ता आदि जैसी गायन शैलियों आती हैं।[7] इनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार है-

पदे - गुरबाणी संगीत में पदे को हिन्दुस्तानी संगीत की ध्रुपद शैली से प्रभावित माना जाता है। ध्रुपद से अभिप्राय अटल या अचल से है। अगर इस तरह से देखा जाए तो सिर्फ ईश्वर ही अटल है तो यह शैली ध्रुपद का अनुसरण करती है। मध्यकालीन में ही गुरबाणी की रचना हुई और उसी समय में ध्रुपद भी प्रचार में था। इसीलिए इस शैली का ध्रुपद से प्रभावित होना स्वाभाविक मालूम पड़ता है। इसमें दो से लेकर आठ पद तक पदे मिलते हैं जिन्हें ध्रुपद के सनातनी रूप से थोड़ी छूट लेकर गाया जाता हैं ताकि श्रोता तक इस काव्य का अर्थ पहुँच सके। कालांतर में इस शैली का प्रचार लगभग ना के बराबर ही सुनने को मिलता है। कई संस्थाएँ आज भी इस शैली का गायन करती हैं, परन्तु सामान्य जनता का इस शैली को समझ पाना मुश्किल ही मालूम पड़ता है।

अष्टपदी - शाब्दिक अर्थ से देखा जाये तो 8 पदों वाली रचना को अष्टपदी कहते हैं। यह सनातनी गायन शैली भारतीय प्रबंध विधा से प्रभावित है। जयदेव ने भी गीत गोविन्द में राग रागिनी सिद्धांत के अंतर्गत अष्टपदी की रचना की।[8] उस समय प्रबंध विधा ज्यादा प्रचार में थी इसीलिए उन्होंने इस विधा का चुनाव अपनी रचनाओं के लिए किया। प्रबंध के चार भाग होते हैं। उद्ग्रह, मेलापक, ध्रुव और आभोग। अष्टपदी में रहाओ वाले पद को ध्रुव की तरह प्रयोग किया जाता है। भाई कान सिंह नाभा के अनुसार अष्टपदी कोई खास विधा का नाम नहीं है, जहाँ 8 पद इकट्ठे मिलते हैं तो वह अष्टपदी कहलाती हैं। श्री सुखमनी साहिब की बानी में गुरू अर्जुन देव द्वारा अष्टपदियों का प्रयोग किया गया है। कालांतर में इस विधा का गायन कही भी सुनने को नहीं मिलता परन्तु इनको कालान्तर में ध्रुपद के अंतर्गत कई जगह गाया जाता है।

पड़ताल - यह गायन शैली गुरू ग्रंथ साहिब में सनातनी काव्य और गायन शैली के रूप में दर्ज है। इस शैली के लिए विद्वानों के अलग-अलग मत है। डॉ. गोपाल सिंह के अनुसार पड़ताल शैली से अभिप्राय गायन के स्केल के साथ संबंधित है।[9] भाई कान सिंह नाभा के अनुसार पड़ताल शैली से अभिप्राय चारताल के भेद से है। ज्यादा

---

5 महानकोश, भाई कान सिंह नाभा, पृ.सं.-441

6 गुरमत संगीत प्रबंध ते पासार, डॉ. गुरनाम सिंह, पृ.सं.-11

7 गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, डॉ. वरिन्द कौर पदम, पृ.सं.-114

8 वही, पृ.सं.-118

9 गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, डॉ. वरिन्द कौर पदम, पृ.सं.-119

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

विद्वान इस शैली का अर्थ ताल को बदलने से लेते हैं, वो शैली जिसमें ताल बदल-बदल कर गाया जाए। गुरमत संगीत में इस विधा के अंतर्गत रहाओ पद को स्थाई के रूप में और बाकि पदों को विभिन्न तालों में गाया जाता है। गुरमत संगीत में 55 पड़तालों का वर्णन मिलता है। यह शैली गुरमत संगीत रचना की जा सकती है जिसका वर्णन और कही नहीं मिलता। कालांतर विश्वविद्यालयों में मुकाबलों के समय इसी विधा का ज्यादा प्रचार बढ़ रहा है। यह बड़ी विडंबना की बात है विद्यार्थी सिर्फ इस विधा को लेकर ही आगे चल रहे हालांकि पूर्ण गुरमत संगीत में गायन शैलियों का भंडार है। शिक्षक वर्ग को भी इस पक्ष पर सोच-विचार करना होगा। विभिन्न फूलों से ही एक गुलदस्ता तैयार होता है। हमें इस पर चिंतन करना होगा ताकि गुरमत संगीत विधा को भविष्य के लिये सुरक्षित रखा जा सके।

होली - गुरमत काव्य को इस तरह रचा गया है कि लोग इसे आसानी से समझ सकें। इसी का अनुसरण करती यह शैली गुरमत संगीत का हिस्सा है। इसमें रचित वाणी धमार शैली पर आधारित है। राग बसंत में कुछ धमार गुरबाणी में मिलते हैं।[10] वसंत ऋतु की शुरूआत में संग्रांद के दिन धमार शैली में इसका गायन किया जाता है। बेशक कालांतर में इसको तीनताल में ही गाया जा रहा है। धमार ध्रुपद ही की तरह एक प्राचीन शैली है, जिसका नाम पहले होरी हुआ करता था। इस विधा का गायन कोई सीखा हुआ गायक ही कर सकता है। श्री भैणी साहिब, पंजाब में आज भी इस प्रथा का गायन किया जाता है। कई रागी (सिख गायन वर्ग) इसका गायन करते हैं, परन्तु मुख्य मंचों पर इस विधा का गायन कम ही सुनने को मिलता है।

गुलदस्ता - गुलदस्ता शैली भारतीय शास्त्रीय सं गीत की रागमाला शैली से प्रभावित है। इसके अंतर्गत सिख गायक वर्ग एक गायन धुन को लेकर उसका गायन अलग-अलग रागों और तालों में करते है। डॉ॰ अजीत सिंह पैंतल के अनुसार

"Often in kirtan ragi's in order to astonish the audience render a peculiar composition as the Rag Sagar or Guldasta. In Hindustani music this particular composition is known as 'Raagmala'. In the composition a lengthy shabad is composed in various raga and tala.[11]

श्लोक - गुरमत संगीत में श्लोकों को ख्याल अंग से गाने की प्रथा है। श्लोक का गायन टप्पा या ख्याल गाने वाले कीर्तनकार करते हैं। इस शैली के अंतर्गत गुरू अंगद देव ने 61 और गुरू तेग बहादुर ने 37 श्लोक दर्ज किये हैं। गुरबाणी के अंतर्गत लिखित रूप में गुरू गोबिंद सिंह द्वारा ख्याल रचित है जिसे 'ख्याल पातशाही 10' के नाम से अंकित किया गया है।[12]

जैसे संगीत का विकास हुआ इसके साथ कई परम्पराओं का जन्म भी हुआ। जिनमें लोक सांगीतिक शैली के तत्व ज्यादा प्रबल थे। लोक संगीत के सहारे उस इलाके की सभ्यता को आसानी से समझा जा सकता है। लोक संगीत

---

[10] गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत्त, गुर प्रताप सिंह गिल, पृ.सं.-40

[11] The Natures & the Place of Music in Sikh Devotional Music & its Affinity with Hindustani Music, Dr. Ajit Singh Paital, page.no.-152

[12] गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत्त, गुर प्रताप सिंह गिल, पृ.सं.-40

का जन्म भाषा के जन्म के साथ हुआ है। इस विधा के साथ मनुष्य अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकता है। गुरबाणी में रचित काव्य लोक गीत के रूप में प्रचलित होता आ रहा है।

सिख गुरूओं द्वारा अलग प्रांतों से प्रेरित या वहां की संस्कृति से प्रभावित होकर मोक्ष प्राप्ति के संदेश के लिए लोक संगीत को माध्यम बनाया। गुरमत संगीत की बहुत सारी वाणी लोक संगीत पर आधारित है। इस का कारण गुरबाणी को जन साधारण तक पहुँचाना था। गुरबाणी संगीत में लोक काव्य या संगीत में गायी जाने वाली शैलियाँ इस प्रकार है-अलाहुनि, छंत, काफी, घोड़ियां, आरती, अंजुली, सद, सोहिला, करहले, चौबोले, थिति, दिन रेन, पहरे, पट्टी, बाराहमाह, बिरहरे, मंगल, वणजारा और वार[13] आदि। इन लोक संगीत अंक की शैलियों में से कुछ का विवरण इस प्रकार है-

अलाहुनि - यह गीत किसी के मृत्यु के बाद गाया जाता है। इस गीत में किसी से बिछड़ने का भाव प्रकट होता है। गुरमत संगीत में इसकी रचना वडहंस राग के अंतर्गत की गयी है।

आरती - भगवान् की आराधना का माध्यम आरती ही है। गुरमत संगीत में इसे ज्यादातर राग धनाश्री के सुरों में गाया जाता हैं भारतीय संस्कृति में आरती को पूजा के रूप में गाया जाता है। इसके लिए थाली में फूल, दीप, गंध, रखकर भगवान् के गीत गाये जाते हैं। गुरू नानक देव जी और कई भक्तों ने भी आरती के लिए धनाश्री राग को माध्यम बनाया है। गुरमत संगीत के अंतर्गत इसमें "गगन में थाल रव चाँद दीपक बने" का गायन किया जाता है। जिसे शाम के समय सौदर की चौंकी के बाद गाया जाता है। इसे आरती की चौंकी भी कहा जाता है।

घोडियां - शादी के समय जब दूल्हा घोडी़ पर चढ़ता है तो दूल्हे की बहने खुशी से घोड़ियों का गायन करती हैं। बहने घोड़ी का लगाम तब ही छोड़ती है या भाई को देती है जब उन्हें अपना मुँह माँगा शगन मिलता है। गुरमत संगीत में इस शैली के अंतर्गत गुरू रामदास द्वारा 2 घोड़ियां रचित की गयी हैं। जिसमें मनुष्य के शरीर को घोड़ी मानकर उसके ऊपर नाम सिमरन की काठी डालकर गुरू के ज्ञान को लगाम बनाकर इस सांसारिक जीवन को पार करने की बात कही है।

वार - युद्ध की व्यथा को सुनाता हुआ गीत 'वार' कहलाता है। इसका गायन ढाढी (सिख गायक वर्ग) द्वारा किया जाता है। गुरमत संगीत में 22 वारों का ज़िक्र मिलता है जिसमें से 21 सिख गुरूओं द्वारा और 1 वार सते और बलवंडे (सिख गायक) की है, जिसे 'टिक्के की वार' भी कहते हैं।[14] इनमें से कुछ वारों के ऊपर प्राचीन ध्वनि संकेत भी दिए गए हैं। गुरू ग्रंथ साहिब में गुरू नानक देव जी की 3, गुरू अमरदास जी की 4, गुरू रामदास जी की 8 और गुरू अर्जुन देव जी की 8 वारें अलग-अलग रागों में दर्ज हैं। जैसे आसा की वार के 1 छंद में आता है "टुंडे अस राजे की धुनि"। कालांतर में वारों का गायन मुख्य संस्थानों में ही मिलता है।

बारामाह - जिस लोक गायन शैली में 12 महीनों का वर्णन हो उसे बारामाह कहा जाता है। इसमें गुरू नानक देव जी ने राग तुखारी और गुरू अर्जुन देव जी ने राग माझ में रचनाएँ की हैं।

---

[13] गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत्त, गुर प्रताप सिंह गिल, पृ.सं.-42

[14] गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, डॉ. वरिन्द कौर पदम, पृ.सं.-132

छंत - यह एक लोक काव्य की शैली है इसका संबंध विवाह शादियों के गीतों के साथ है। यह श्रृंगार रस का अहम् नमूना है। गुरबाणी संगीत में इसके अंतर्गत सिख गुरूओं ने वियोग के अनुभव, संयोग में सुख की अभिलाषा आदि का विवरण दिया है। गुरबाणी में छंत काव्य के अंतर्गत गुरू नानक देव, गुरू रामदास और गुरू अर्जुन देव ने विभिन्न रागों जैसे गौरी, आसा, बिलावल दक्षिण आदि रागों में रचा है। छंत में स्थाई अंतरा नहीं होता क्योंकि इसमें रहाओ पद नहीं होता। इसमें पद की संख्या 4 तक रहती है और पद में 6 पंक्तियाँ रहती हैं।

काफी - फकीरों और संतों के द्वारा गाये गीत अक्सर काफी कहलाते हैं। भारतीय संगीत में इस शैली का विवरण सुनने को मिलता है जिसका संबंध मुल्तान की धरती से जोड़ा जाता है। सूफ़िआना कलाम हमें श्लोक, काफियां और दोहरों के रूप में मिलते हैं। सिख गुरूओं द्वारा इस रचना के लिए सुगम संगीत के रागों को चुना गया जैसे तिलंग, आसा और सूही आदि। कालांतर में इस विधा का प्रचार बढ़ गया है। लोगां ने सूफी संगीत नाम से नयी प्रथा को जन्म दे दिया है और जिसका अनुसरण भी किया जा रहा है।

मंगल - यह गीत खुशी का सूचक है। इसे अक्सर विवाह के समय गाया जाता है। हिंदी साहित्य में जानकी, पारवति, मंगल और रूक्मिणि मंगल तीन प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।[15] राग बिलावल के अंतर्गत गुरू रामदास ने मंगल की रचना की।

वणजारा - प्राचीन समयों में जब व्यापारी लोग जानवरों का सौदा कर वापस लौटते थे तब इस शैली का गायन करते थे। यह गीत लम्बी हेक लगाकर गाया जाता है। गुरू रामदास ने इसके अंतर्गत श्री राग में वाणी की रचना की है।

इस तरह से इन दोनों अंगों द्वारा संगीत का प्रचार किया जाता रहा है। गुरूद्वारों में या गुरमत संगीत के शिक्षण केन्द्रों में गुरमत संगीत सिखाया जा रहा है, परन्तु अभी भी बहुत सारी बातें ध्यान देने योग्य है। गुरमत संगीत का प्रचार तो हुआ है पर वह प्राचीन स्वरूप जहाँ से गुरमत संगीत का बीज बोया गया था आज वो सुन पाना मुश्किल है। इन गायन शैलियों का नाम बस किताबों में ही पढ़ने को मिलता है। जैसे हमने इन शैलियों को किताबों में सुना है शायद भविष्य में आने वाले विद्यार्थियों को इन विषयों को जानने की इच्छा भी न हो। इसीलिए आज ज़रूरत है गुरमत संगीत के ऊपर पुनर्विचार करने की। आज हमारे पास प्रचार के माध्यम तो बहुत हैं परन्तु प्रचार के लिए कुछ नहीं है। ज़रूरत है कि विश्वविद्यालयों के स्तर पर इस परम्परा विषय के रूप में स्थापित किया जाए ताकि इस परम्परा को भविष्य में सुरक्षित रखा जा सके।

निष्कर्ष

1. गुरमत संगीत की गायन परंपरा से परिचय होगा।
2. गुरमत संगीत के गायन रूपों का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ संबंध उज्ज्वल होगा।
3. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयुक्त शब्दावली को समझने में आसानी होगी।
4. सिख संप्रदाय में 'शब्द कीर्तन' करने की परंपरा को समझा जा सकेगा।

[15] गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत्, गु प्रताप सिंह गिल, पृ.सं.-441

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

5. गुरमत संगीत में प्रयुक्त दोनें गायन रूपों भाव शास्त्रीय और लोक गायन रूपों को विभाजित किया जा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. The Sikh Musicology, Gurnam Singh, Kanishka Publishers, Distributors, New Delhi, First Published 2001
2. गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, डॉ. वरिन्द कौर पदम, अमरजीत साहित प्रकाशन, पटियाला, 2005
3. गुरमत संगीत प्रबंध ते पासार, डॉ. गुरनाम सिंह, पब्लिकेशन ब्यूरो, पटियाला, 2012
4. गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत्त, गुर प्रताप सिंह गिल, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, 2001
5. संगीत रत्नावली, डॉ. अशोक कुमार 'यमन', अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ, 2008
6. महानकोश, भाई कान सिंह नाभा, पटियाला, 1981
7. पंजाब की संगीत परंपरा, डॉ. गीता पैंतल, राधा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्कारण 1998
8. गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत्त, गुर प्रताप सिंह गिल, पृ.सं.-441